कर ली
दुनिया
मुट्ठी में

हम उन सभी स्पॉन्सर का धन्यवाद करना चाहते हैं जिन्होने हमारे इस काम को सपोर्ट किया और हममें विश्वास दिखाया। हम उन सभी व्यक्तियों का भी धन्यवाद करना चाहते हैं जिन्होने न सिर्फ प्रशिक्षण दिया बल्कि हर कदम सीखने वालों को विश्वास दिलाया कि वो सीख सकते हैं।

कर ली दुनिया मुट्ठी में

संजय चित्तौड़ा

स्टेप एकेडेमी

स्टेप एकेडमी, आजीविका ब्यूरो स्किल ट्रेनिंग का कार्य करते हुए आज अपने 18 वर्ष पूरे कर रहा है। ग्रामीण विशेषकर आदिवासी समुदाय को ट्रेनिंग प्रोग्राम से जोड़कर उनकी आजीविका को सुदृढ़ करना स्टेप एकेडमी का मुख्य ध्येय है। राजस्थान के दक्षिण में सिरोही से लेकर, उदयपुर, राजसमन्द, डूंगरपुर, और बांसवाडा जिले के सुदूर आदिवासी युवा इन ट्रेनिंग प्रोग्रामों से जुड़े और उनके सपनों ने एक नयी उड़ान भरी। हमने वर्ष 2004 में जब ट्रेनिंग प्रोग्राम को गोगुन्दा के चुनिन्दा माइग्रेंट युवाओं के साथ शुरू किया था, तब विचार यह था कि प्रवास पर जानेवाले कम पढ़े-लिखे युवा स्टेप एकेडेमी में आकर नयी स्किल सीखें और ट्रेनिंग के बाद, अपने प्रवास के दौरान नए स्किल के साथ अपनी आजीविका को और बेहतर करें। किन्तु आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो पता चलता है कि ट्रेनिंग के बाद इन युवाओं ने अपनी मेहनत और साहस से न केवल अपनी आजीविका को कौशलपूर्ण व्यवसाय में बदला बल्कि स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाते हुए यहाँ अपनी पहचान भी स्थापित की है।

पढाई के साथ-साथ या बीच में पढाई छोड़कर अपने दोस्तों, घर के बड़ों या स्थानीय ठेकेदारों के साथ सूरत, राजकोट, मुंबई या अहमदाबाद चले जाना यहाँ के ग्रामीण किशोरों और युवाओं के लिए सामान्य बात है। इस प्रवास में पहले से कुछ पता नहीं होता और जब तक समझ में आता है, ये दुश्चक्र में फँस चुके होते हैं। लचर स्कूली व्यवस्था, असमान विकास का ढांचा, और अपने बच्चों के भविष्य से अनजान अभिभावक इस अकुशल और असुरक्षित प्रवास को बढ़ाने में मुख्य कारक होते हैं। ये किशोर, सूरत में साड़ी-कटिंग का काम, उत्तर गुजरात के खेतों में भाग की खेती, वहां कैंटीन, होटलों और रेस्टोरेंट्स में हेल्पर का काम, मुंबई और वापी की गर्मी और फैक्ट्रियों के धूल और धुआँ-भरे वातावरण में मजदूरी करते हुए, मुंबई की चाय भाकरी पर हेल्पर, नए मंदिरों की मूर्तियों को तराशने और न जाने कितने ही जोखिम भरे दूसरे कार्यों में अपने प्रवास के दौरान नजर आते हैं। पर जोखिम भरे ये काम करते हुए भी ये लोग इतना नहीं कमा पाते कि अपने परिवार का ठीक से भरण पोषण कर सकें। लेकिन जो भी हो, इनके परिवार की प्राथमिकता अब केवल इनकी मेहनत से होनेवाली आय बन जाती है। काफ़ी कम मज़दूरी पर इन शहरों में इस तरह के कार्य करते हुए ये शोषण के शिकार होते हैं। इधर गाँवों में पीछे छूटीं इन्हीं परिवारों की महिलाएं और लड़कियाँ अपनी बची-खुची जमीन पर खेती में लगी होती हैं या फिर, मनरेगा, गाँव के किसी कोने में चलने वाले निर्माण कार्य या पड़ोस की किसी पत्थर-खदान में अपने वर्तमान को, समक्ष पुरुष से कम मिलने वाली मजदूरी के बावजूद बनाने-संवारने में लगी रहती हैं। यहाँ किसी प्रकार से अपने सपने को संभालकर उसे मूर्त रूप देने जैसा कोई अवसर उनके लिए नहीं होता। पितृसत्ता और जाति व्यवस्था इस मजबूरी पर और भी घाड़ी स्याही से मुहर लगा कर इन्हें काले अँधेरे में धकेलती नजर आती हैं।

ऐसे में इनके साथ हो इनके सपनों की पहचान करना और उन्हें भविष्य के प्रति जागरूक

करना बहुत ही चुनौतिपूर्ण हो जाता है। स्टेप एकेडमी अपने ट्रेनिंग प्रोग्रामों में ऐसे ही युवाओं और युवतियों की पहचान करते हुए, उन्हें उनके मुताबिक ट्रेनिंग स्किल्स से जोड़ रहा है। स्टेप में हम शैक्षणिक योग्यता, आयु, औपचारिक ट्रेनिंग और ट्रेनिंग के दौरान होने वाले मजदूरी के नुकसान से आगे बढ़ते हुए इन युवाओं को स्किल ट्रेनिंग के अवसर प्रदान कर रहे हैं। हमारी प्राथमिकता है समाज में व्याप्त जातिगत, लैंगिक और आर्थिक असमानताओं को समाप्त कर इन युवाओं को अपने सपनों को हकीकत में बदलने का अवसर उपलब्ध कराना। हमने युवाओं को जोखिमभरे कार्यों से निकाल कर उन्हें कुशल कार्यों में हाथ अजमाने के अवसर उपलब्ध कराए। एक महीने का विशेष करिकुलम तैयार कर इसको जीवन कौशल की विभिन्न रोजगारपरक स्किल्स से सजाया और पोस्ट-ट्रेनिंग सपोर्ट देते हुए उद्यमी बनने का रास्ता दिखाया। ग्रामीण महिलाओं और युवतियों के लिए, उनके परिवारों और अभिभावकों के साथ ट्रस्ट स्थापित करते हुए उन्हें गैर-परंपरागत आजीविका के अवसर उपलब्ध करवाए, जिससे कि वे नए बाज़ार में अपनी नयी भूमिकाएं स्थापित कर सकें।

शहरों में और बाद में गाँवों में भी कार्य पर रहते हुए अपने स्किल्स को बढ़ाने के लिए OJT जैसे अवसर खड़े किये जिससे पारिवारिक जिम्मेदारी वाले ट्रेनी की मजदूरी का नुकसान न हो और वे भी आय के उच्चतम प्रतिमान को प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार भविष्य के प्रति सजग और नए बाज़ार के अनुरूप ग्रामीण युवाओं की तैयारी के लिए प्लेसमेंट रेडीनेस प्रोग्राम भी डिजाईन किया और ग्रामीण युवाओं को औपचारिक क्षेत्र में नियुक्तियां दिलवायीं।

स्टेप एकेडमी अपने अनौपचारिक स्वरूप में रहते भी औपचारिक रूप से ग्रामीण युवाओं की आजीविका और जीवन की बेहतरी के लिए प्रतिबद्ध है। नियमित रूप से नित नए नवाचारों से स्किल ट्रेनिंग, एमप्लौयबिलिटी और प्लेसमेंट के क्षेत्र में वह निरंतर अग्रसर है।

संजय चित्तौड़ा

स्टेप एकेडमी

आभा

एडवोकेसी

लेखक की कलम से

इस किताब में प्रत्येक महिला एवं किशोरी की अनूठी यात्रा, उसके संघर्ष का वृत्तांत है। अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर कुछ हासिल कर पाने की दास्तान है। सबकी कहानी में एक समानता यह है की उन्होंने कौशल प्रशिक्षण लिया।

महिलाओं खासतौर पर ग्रामीण महिलाओं और किशोरियों को कौशल प्रदान करते वक़्त संस्था ने महसूस किया कि कैसे प्रशिक्षण की प्रक्रिया खासतौर पर गैर-पारंपरिक कार्यों में उन्हें सशक्त बनाने और पारंपरिक मानदंडों और भूमिकाओं को चुनौती देने में मदद करती है। इसके साथ साथ इससे उनके समुदायों में सकारात्मक बदलाव भी आता है। प्रशिक्षण पाए इन महिलाओं से बातचीत के दौरान लगातार यह बात उभर कर आयी कि कैसे उन्होंने सोचा ही नहीं था कि वे भी कुछ ऐसा कर सकती हैं। पर अब उन्हें विश्वास हो गया है कि महिलाओं के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।

प्रशिक्षित होने से आर्थिक आज़ादी तो सुनिश्चित हुई ही साथ में इसने पुरुष सदस्यों पर निर्भरता को भी कम किया, जिससे महिलाओं को वित्तीय निर्णयों और संसाधनों पर अधिक नियंत्रण मिला। नए कौशल सीखने और विशेषज्ञता हासिल करने से महिलाओं में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ा है।

गैर परंपरागत कार्यों में प्रशिक्षण ने निश्चित तौर पर लैंगिक रूढ़िवादिता पर चोट किया है। जैसे कि पहले माना जाता था कि महिला सिर्फ मज़दूर ही बन सकती है कारीगर या ठेकेदार नहीं। आज प्रशिक्षण के बाद कई महिलाएं न सिर्फ सफल कारीगर हैं बल्कि ठेकेदार भी हैं और अन्य महिलाओं और पुरुषों को सिखा भी रही हैं।

संक्षेप में महिलाओं को कुशल बनाना उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने, उनका आत्मविश्वास बढ़ाने, लैंगिक मानदंडों को चुनौती देने, और सामाजिक स्थिति में सुधार करने में मदद करता है। ये सशक्त महिलाएँ अपने समुदायों को बदलने और पीढ़ियों में सकारात्मक बदलाव को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में पैदा हुई कृष्णा से जैसे ही बात शुरू हुई उसका पहला वाक्य था, " मैं जो कुछ भी हूँ सिर्फ अपनी माँ की वजह से हूँ। वही मेरी प्रेरणा हैं।"

21 वर्षीय कृष्णा कंप्यूटर ट्रेनर है। कृष्णा की माँ पिछले 15 साल से प्रतापगढ़ के एक सरकारी हस्पताल में हेल्पर का काम करती है। हमेशा से उन्हें चिकित्सा क्षेत्र में दिलचस्पी थी। पर परिस्थितिवश उनकी शिक्षा नहीं हो पाई। शादी के बाद भी आर्थिक स्थिति नहीं बदली। घर को सपोर्ट करने के लिए उन्हें काम करना पड़ा। उन्हें जब हस्पताल में नौकरी का अवसर मिला तो उन्होने फ़ौरन हाँ कर दी। पंद्रह साल पहले उन्हें 6 घंटे काम करने के लिए 3 हज़ार मिलते थे जो उन्हें अपने अनुभव और पढ़ाई को देखते हुए ठीक लगा था। पर उन्हें क्या मालूम था कि इतने वर्ष के अनुभव के बाद भी उन्हें सिर्फ 4 हज़ार ही मिलेंगे। कम आय के बावजूद कृष्णा की माँ ने तय कर लिया था कि वह अपने दोनों बच्चों को खूब पढ़ाएंगी।

कृष्णा का एक भाई है जो अभी 12वीं में है। आठवीं तक पढ़े कृष्णा के पिता फलों का ठेला लगाते हैं।

कृष्णा प्रतापगढ़ के एक सरकारी स्कूल में पढ़ी। उसे विज्ञान एवं गणित में खास दिलचस्पी थी। पर विडम्बना यह थी कि स्कूल में हमेशा किसी न किसी शिक्षक की कमी रहती थी। कभी गणित का शिक्षक नहीं होता तो कभी विज्ञान का और कभी अंग्रेज़ी का शिक्षक गायब रहता था। स्कूल में अध्यापक या तो छुट्टी पर या ट्रान्सफर होने और नयी पोस्टिंग न होने की वजह से अनुपस्थित रहते थे। दसवीं तक तो कृष्णा खुद से पढ़कर भी अच्छे नंबर से पास हो जाती थी। पर बड़ी क्लास में आने के बाद उसे मुश्किल पेश आने लगी। घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि प्राइवेट ट्यूशन की मदद ले सके। इंग्लिश के टीचर तो लगभग कभी स्कूल आए ही नहीं। इसीलिए उसकी इंग्लिश बहुत कमजोर रही। इस तरह कृष्णा को स्कूल पास करने में बहुत मुश्किल हुई।

कोरोना टाइम में बड़ी हिम्मत से कृष्णा ने एक सरकारी हॉस्पिटल में लैब असिस्टेंट के तौर पर आरटीपीसीआर टेस्ट करने का काम किया। कृष्णा सब काम करने में आगे रहती है पर उसकी इच्छा कंप्यूटर से संबंधित तकनीकि क्षेत्र में काम करने की थी और इसके लिए अवसर की तलाश में थी। इस बीच, उसे आजीविका ब्यूरो द्वारा चलाए जा रहे ई-मित्र ऑपरेटर ट्रेनिंग का पता चला। कृष्णा ने सोचा कि यह तो बहुत अच्छा मौका है। प्रशिक्षण के बाद वह अपना ई-मित्र सेंटर भी खोल सकती है। उसने बहुत लगन से ट्रेनिंग ली। अपने बैच में कृष्णा सबसे बढ़िया निकली। उसके बाद एक सेंटर में कुछ समय के लिए काम किया और अच्छा अनुभव प्राप्त किया। कुछ समय बाद उसे पता चला कि आजीविका ब्यूरो को एक कम्प्यूटर ट्रेनर की तलाश है। तब इस पोज़िशन के लिए उसने भी आवेदन किया और उसका चयन भी हो गया। आज वह एक ट्रेनर बन गयी है। अपने से कहीं बड़ी उम्र वालों को ट्रेनिंग देती है। उससे ट्रेनिंग लेने के बाद दो लड़कियों ने अपने ई-मित्र केंद्र शुरू कर दिये हैं।

कृष्णा कहती है कि जब तक आर्थिक रूप से अपने पैर नहीं जमा लेगी, शादी नहीं करेगी।

कृष्णा साँवरिया

राजकुमारी के परिवार की कहानी चाहे नयी न लगे पर उसकी सफलता, मेहनत और विश्वास की दास्ताँ अनूठी है।

बरसों पहले राजकुमारी के माँ पिता काम की तलाश में बिहार से अहमदाबाद आए थे। यहाँ पिता को साइकिल सुधारने की दुकान में काम मिला और माँ एक फ़ैक्टरी में दिहाड़ी मज़दूरी करने लगी। दोनों के कमाने के बावजूद दो वक़्त की रोटी के साथ बच्चों को पढ़ाना मुश्किल था। विकास का मॉडल समझे जाने वाले शहर में प्रवासी श्रमिक परिवार की स्थिति की यही असलियत थी। राजकुमारी ने भी तीसरी कक्षा के बाद स्कूल जाना छोड़ दिया था और घर के काम में हाथ बँटाने लगी और जब कुछ और बड़ी हुई तो घर की आमदनी बढ़ाने के लिए घर से ही माला बनाने और मोती पिरोने का काम करने लगी।

इसी बीच उसके भाई को आजीविका ब्यूरो के मोबाइल रिपेयर प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी मिली और उसने उसे प्रोत्साहित किया कि वह भी प्रशिक्षण ले। पर राजकुमारी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि जिसे पढ़ना लिखना भी नहीं आता वह कैसे मोबाइल सुधारना सीखेगी। पर भाई ने न सिर्फ राजकुमारी को प्रोत्साहित किया बल्कि प्रशिक्षण देने वाले को भी विश्वास दिलाया की राजकुमारी सीख सकती है।

भाई का विश्वास न टूटे इसलिए राजकुमारी ने न सिर्फ मेहनत और लगन से प्रशिक्षण पूरा किया बल्कि एक वर्कशॉप में अब वह मोबाइल सुधारने का काम करती है और हर महीने पंद्रह हज़ार रुपये कमाती है।

राजकुमारी मौर्या

दाहोद की रहने वाली आदिवासी समुदाय की 35 वर्षीय रेखा बरसों से निर्माण काम करती हैं। रेखा ने लगभग 15 साल की उम्र से हेल्पर के रूप में यह काम शुरू किया था। हेल्पर की दिहाड़ी प्रतिदिन रुपये 350- 400 है। 20 साल से काम करते हुए भी रेखा की दिहाड़ी में 50 से 100 रुपये का इज़ाफ़ा हुआ। पढ़ी लिखी न होने की वजह से कोई और काम भी मिलना मुश्किल था। अहमदाबाद के असारवा क्षेत्र में खुली बस्ती में रेखा अपने पति और तीन बच्चों के साथ गुज़र बसर करती आ रही है। इतनी मेहनत के बावजूद रेखा का परिवार अपने सर पर छत का अधिकार प्राप्त नहीं कर पाया।

इस बीच रेखा को पता चला कि निर्माण कार्य में ऑन जॉब ट्रेनिंग हो रही है। जिसमें वो हेल्पर से कारीगर बन सकती है। 20 साल से एक ही काम करते हुए रेखा ऊब भी चुकी थी ,उसे लगा कि ऐसा मौका कभी नहीं मिलेगा। रेखा ये भी कहती है कि उसे कोई कुछ सिखाएगा या वो कुछ और सीख सकती है का ख्याल कभी नहीं आया था।

प्रशिक्षण से जुडने के बाद रेखा बहन मे आत्मविश्वास बढा, 2 महीने के प्रशिक्षण मे जुड़ने के पहले उनकी दिहाड़ी रु.400 तक मिलती थी ओर अभी रु.600 से रु.700 तक की दिहाड़ी मिल जाती है, आमदनी बढ़ने से आर्थिक स्थिति सुधरी है। पहले नाके पर पति के साथ जोड़ी के रूप में काम करने जाती थी,पर अब उसका पति खुद ठेकेदार बन गया है और रेखा साइट पर काम देखने में उसकी मदद करती है। रेखा अन्य महिलाओं को ट्रेनिंग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है।

रेखा

नागपुर से राजसमंद जिले की एक छोटी सी पंचायत तक का सफर हमारी जाति व्यवस्था की कहानी बयान करता है।

प्रेमलता के पिता छोटी सी उम्र में काम की तलाश में राजस्थान के एक गाँव से नागपुर चले गए थे। वहाँ कुछ दिन इधर उधर काम करने के बाद उन्होंने अपना होटल खोला। यह होटल काफी बढ़िया चल पड़ा। इस बीच इनकी दो बेटियाँ और दो बेटे हुए। चारों बच्चे नागपुर में ही स्कूल जाते थे।

प्रेमलता बताती है कि कैसे उसके पिता कठोर रूप से स्ट्रिक्ट थे। वह जो भी बोलते थे सबको मानना पड़ता था। छुट्टियों में ये सब लोग गाँव आते थे। एक बार जब प्रेमलता 8वीं कक्षा में थी और सब लोग गाँव आए हुए थे। उसके दादा जी ने उसके पिता से कहा कि अब वह बड़ी हो गयी है और उसकी शादी हो जानी चाहिए। और यह भी कहा कि नागपुर में तो उनकी जात-बिरादरी का कोई होगा नहीं इसलिए गाँव में ही शादी हो जानी चाहिए। पिता मान गए और दादा ने उनको जो कहा उसे हुक्म बनाकर ज़ारी कर दिया। इस तरह प्रेमलता की पढ़ाई भी छूट गयी और शहर भी। गाँव में उसकी शादी हो गयी।

प्रेमलता के जीवन में एक और मोड़ आया। बच्चे जब स्कूल जाने लगे तब उसकी फिर इच्छा हुई की वह भी कुछ करे। पर स्कूल को छोड़े 20 साल हो चुके थे और उसे विश्वास नहीं था कि अब वह कुछ और सीख भी पाएगी। लेकिन आजीविका ब्यूरो की एक वॉलंटियर ने बताया कि वे लोग कमर्शियल टेलरिंग का एक कोर्स शुरू कर रहे हैं और उस जैसी महिलाएं इसमें शामिल हो सकती हैं। पहले तो प्रेमलता को विश्वास ही नहीं हुआ। दूसरा, उसे इस काम में कोई दिलचस्पी नहीं थी। पर उसके घरवालों ने उसे सीखने के लिए खूब उत्साहित किया। इस तरह उसने ट्रेनिंग ले ली। ट्रेनिंग के बाद वह थोड़ा बहुत सिलाई का काम करने लगी। इस बीच कोविड आ गया और सारे काम रुक गए। लेकिन तभी संस्था ने बताया कि कोविड के चलते मास्क बनाने के बहुत से ऑर्डर आये हैं। लॉक डाउन के कारण घर में बैठे बैठे प्रेमलता कपड़े के मास्क, बैग, एप्रन, यूनीफ़ॉर्म इत्यादि के बड़े ऑर्डर लेने लग गयी। ऑर्डर बड़े थे इसलिए और लोग भी साथ में जुड़ते गए और प्रेमलता सुपरवाइज़र बन गयी।

प्रेमलता बैरागी

उदयपुर के सायरा ब्लॉक में रहने वाली कंकु मीणा को सिलाई करने का बचपन से शौक था। पर न तो उसके घर में और न आसपास कोई सिलाई करता था। सिलाई मशीन के बगैर वो सुई धागे से कुछ कुछ सिलती रहती थी। उसे यह दुख रहता था कि वो ठीक तरह से सिलाई नहीं कर पाती है। इस बीच उसकी शादी हो गयी। कुछ समय के लिए कंकु घर परिवार और बच्चों में व्यस्त हो गयी। पर सिलाई करने का शौक ख़त्म नहीं हुआ। एक बार उसे कहीं से पता चला कि आजीविका ब्यूरो नामक संस्था खासतौर पर आदिवासी महिलाओं एवं किशोरिओ के लिए टेलरिंग का कोर्स शुरू कर रही है। उसने उसी वक़्त तय कर लिया कि वो ज़रूर सीखेगी। ट्रेनिंग सेंटर दूर था और बच्चे छोटे। कंकु ने सोचा कि ऐसे में क्या हल निकाला जाए। तब संस्था ने बताया कि सेंटर में रहने का इन्तज़ाम भी है और वो बच्चों को चाहे तो साथ में ला सकती है।

इस तरह कंकु ने सिलाई सीखी और मशीन भी खरीदी और अपने घर से लोगों के कपड़े सिलने लगी। पर घर पहाड़ी के ऊपर काफी दूर था जहां लोग पहुँच नहीं पाते थे। तब कंकु ने निश्चय किया कि वो अपनी एक दुकान ले कर सिलाई करेगी। आज कंकु के पास तीन सिलाई मशीनें हैं और वो अपने क्षेत्र की सबसे अच्छी और व्यस्त टेलर मानी जाती है।

कंकु मीणा

झाड़ोल की सोवनी बाई की ज़िद आसपास की कितनी महिलाओं का जीवन बदल सकती है इसका अंदाज़ा उससे मिलने के बाद ही लगाया जा सकता है।

45 वर्षीय सोवनी जब 16 साल की थी तो उसकी शादी हो गयी । सोवनी के चार भाई और दो बहनों में से किसी ने भी पढ़ाई नहीं की। पढ़ाई न करने की कोई भी वजह उसे अभी याद नहीं है।

सोवनी ने शादी के पहले कभी कोई खास काम नहीं किया था पर ससुराल में आते ही उस पर काफी भार पड़ गया। पति का स्वास्थ्य कुछ खास ठीक नहीं था। वह घर की छोटी सी खेती में हाथ बंटा पाते थे। दो बेटियों और दो बेटों की देखभाल की सारी ज़िम्मेदारी इस पर थी। खेती से घर का खर्चा नहीं चलता था। बच्चे जब थोड़े बड़े हुए सोवनी ने घर के बाहर मज़दूरी करना शुरू कर दिया। लेकिन मज़दूरी भी कुछ खास नहीं होती थी।

फिर सोवनी को पूनम चंद नामक एक ठेकेदार के साथ काम करने का मौका मिला। पूनम चंद न्यूनतम वेतन तो देता ही था साथ में नियमित तौर पर काम और रोज़ाना पूरी मज़दूरी भी देता था। पूनम चंद के साथ काम करते हुए जब सात-आठ साल बीत गए तो एक बार उसने पूनम चंद से कहा कि वह भी कुछ अलग काम करना चाहती है। पर ठेकेदार ने जवाब नहीं दिया। हालांकि मना भी नहीं किया। सोवनी का इस बात से थोड़ा हौसला बढ़ा। एक ही तरह का काम करते हुए सोवनी थक भी गयी थी और उसकी मजदूरी भी कम थी। वह पुरुषों को लगातार काम करते देखती थी और उसे लगता था कि वह भी ऐसा कर सकती है।

इस बीच आजीविका ब्यूरो की स्टेप इकाई के युवा मित्र पूनम चंद की एक साइट पर आए जहां सोवनी भी काम कर रही थी। युवा मित्र ने पूनम चंद से कहा कि उसे साइट पर काम कर रही महिला हेल्पर को भी कारीगर की ट्रेनिंग देनी चाहिए। इसके लिए संस्था ट्रेनी के साथ ट्रेनर को भी सपोर्ट करेगी। थोड़ा परंपरा का हवाला देते हुए पूनम चंद ने आनाकानी तो की पर फिर मान गया। इस तरह सोवनी का वर्षों का कारीगर बनने का सपना पूरा हो गया। आमदनी भी दोगुनी हो गयी। सोवनी अभी भी पूनम चंद की साइट पर कारीगर का काम करती है। इसके अलावा कभी कोई साइट स्वतंत्र रूप से मिल जाये तो काम ले लेती है। अभी तक उसने कई महिला हेल्परों को कारीगर बना दिया है।

सोवनी झाड़ोल के अलावा उदयपुर में भी ठेका लेती हैं।

पूनम चंद भी यह मानते हैं कि कोई भी ऐसा काम निर्माण कार्य में नहीं है जो महिलाएं नहीं कर सकतीं। बल्कि वे बेहतर कारीगर होती हैं क्योंकि वह सलाह भी ध्यान से सुन लेती हैं। बार बार बीड़ी तमाखू के लिए काम को रोकती नहीं हैं। उनका कहना है कि जब भी मौका लगेगा वह अपनी साइट पर सिर्फ महिलाओं को काम पर रखेंगे। यह बहुत बड़ा बदलाव है!

सोवनी बाई

राजस्थान के उदयपुर जिले के खेरवाड़ा ब्लॉक की एक कन्स्ट्रक्शन साइट पर चौंतीस वर्षीया कमला खराड़ी से मुलाक़ात हुई तो विश्वास नहीं हुआ कि कुछ ही सालों के अंदर उन्होने सालों से चली आ रही परम्पराओं को तोड़ा है। कार्य क्षेत्र में भी और पारिवारिक जीवन में भी।

जैसा कि हम आमतौर पर देखते हैं, आज भी गाँव में बहुत कम उम्र में लड़के लड़कियों की शादी कर दी जाती है। ज़्यादातर बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते। इसके अलावा उस उम्र में वे बालिग भी नहीं होते। कमला भी जब 15 वर्ष की थी, उसका विवाह हो गया। पति अहमदाबाद में एक होटल में काम करता था। शादी के एक साल बाद सातवें महीने में एक बेटी हुई जो बहुत कमजोर थी। बेटी को NICU में 2 महीने तक रखना पड़ा। कमला के लिए सीज़ेरियन सेक्शन के बाद बच्ची को देखना बहुत मुश्किल था। पति होटल में 12 से 14 घंटे काम करता था। अभी उसकी बच्ची एक वर्ष की ही हुई थी, कमला का फिर सिज़ेरियन सेक्शन से एक और बेटा हुआ और वह भी 7 महीने की गर्भ के बाद। 18 वर्ष की उम्र की कमला के लिए 2 बच्चे संभालना बहुत मुश्किल हो गया और उसने तय किया कि अब वह अहमदाबाद में नहीं अपने गाँव में रहेगी। गाँव में उसके मायके वाले और ससुराल वाले दोनों थे।

गाँव वापिस आने के बाद कमला को यह एहसास हुआ कि 2 बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए पति की कमाई पर्याप्त नहीं है उसे कुछ काम भी करना पड़ेगा। दुर्भाग्य से वह पढ़ी लिखी तो थी नहीं। उसे सिर्फ अपना नाम लिखना आता था। ऐसी स्थिति में कमला के पास एक कन्स्ट्रक्शन साइट पर बेलदारी करने के अलावा कोई चारा नहीं था। जिसमें मेहनत तो बहुत थी पर पैसे कम। काम करते करते बहुत वक़्त बीत गया। इसी दौरान उसे पता चला की एक साइट पर आजीविका ब्यूरो ऑन द जॉब (ओजेटी) शुरू कर रही है। कमला ने साइट के ठेकेदार मनसा राम से मार्बल तथा टाइलफिटिंग का काम सीखने की इच्छा ज़ाहिर की। मनसा राम एक मज़दूर यूनियन के सदस्य भी थे। मजदूरों के अधिकारों को समझने वाले और मजदूरों के हकों के लिए लड़ने वाले मनसाराम के समक्ष इस तरह की इच्छा पहले किसी ने नहीं जतायी थी। उन्होंने कमला को यह काम सिखाना शुरू कर दिया। सौभाग्य से घर में बच्चों की देखभाल के लिए सास ससुर थे।

कमला प्रशिक्षण के बाद पार्टनरशिप में मार्बल एवं टाइल फिटिंग के ठेके लेने लग गयी। आमदनी बढ़ने के साथ साथ इससे उसका आत्मविश्वास भी बढ़ा। पर इसी दौरान एक दुर्घटना में रेल की पटरी पार करते वक़्त अन्य आठ मजदूरों के साथ कमला के पति भी ट्रेन की चपेट मे आ गए। पति की अचानक मौत से कुछ समय तक कमला को होश नहीं रहा। जब होश आया तो यह समझ भी आया कि अब उसे अकेले ही बच्चों की परवरिश करनी है। कमला कहती है की प्रशिक्षण ने सिर्फ काम नहीं सिखाया था बल्कि उसमें एक आत्मविश्वास भी जगाया था। कमला ने दोबारा काम शुरू किया। कमला अपने तीनों बच्चों को पढ़ाने के लिए बहुत इच्छुक थी। आज एक 12वीं में, एक 10वीं में और तीसरा 8वीं में है।

आज कमला ने सफलता की एक और मंज़िल पार कर ली है। अब वह सिर्फ ट्रेनी नहीं है बल्कि अब वह एक ट्रेनर है और महिला और पुरुष दोनों को मार्बल एवं टाइल की फिटिंग की ट्रेनिंग दे रही है।

कमला के दो सपने हैं – एक, उसके बच्चे कभी मजदूर न बनें। पढ़ने लिखने का काम करें।

दूसरा, अपना घर बनाए और उसमें सुंदर मार्बल की फ़िटिंग वह खुद करे।

एक महीने में 20 से 30 हज़ार बचत करनेवाली कमला अपनी कामयाबी और विश्वास का श्रेय आजीविका ब्यूरो की स्टेप एकेडमी को देती है। उसका मानना है कि बिना प्रशिक्षण के कभी सशक्तिकरण नहीं हो सकता।

कमला खराड़ी

21 वर्ष की उम्र में अपने घर की आर्थिक ज़रूरत को पूरा करने का दबाव, माँ के एवं अपने सपने को पूरा करने की चाह की बात सुनकर लगता है ज़िंदगी कितनी मुश्किल होगी। पर काजल के चेहरे पर एक शिकन भी नहीं दिखती और फिर वह कहावत इस परिस्थिति पर सटीक लगती है – जहां चाह है वहाँ राह है।

छोटी सी काजल का छोटा सा परिवार है। एक माँ है और एक छोटी बहन।

माँ ने दूसरों के घर खाना बनाकर दोनों बेटियों को स्कूल में पढ़ाया जबकि वो खुद निरक्षर है।

अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आनेवाली काजल स्कूल की अन्य गतिविधियों में भी सबसे आगे रहती थी। अपने कक्षा की मॉनिटर रहनेवाली काजल एक बार अपने स्कूल की प्रेसिडेंट भी बनी।

काजल को पढ़ाई के अलावा कंप्यूटर सीखने का भी बहुत शौक था। दुर्भाग्य से स्कूल में कंप्यूटर तो थे पर कंप्यूटर टीचर नहीं। यह बात काजल को बिल्कुल भी ठीक नहीं लगती। जब काजल 12वीं कक्षा में थी, उसने तय किया कि वह जिला कलेक्टर से इसकी शिकायत करेगी। उसके स्कूली दोस्तों ने कहा कि अगर वह स्कूल की शिकायत करेगी तो शिक्षक उससे नाराज़ न हो जाएँ। वैसे भी यह स्कूल में उसका आखिरी साल है। पर हमेशा दूसरों का भला चाहनेवाली काजल को लगा उसको न सही उसके स्कूल के अन्य बच्चों को इसका फायदा होगा। बिना डरे उसने अपने शिक्षक से बात की। उन्होंने काजल को सराहा कि उसने स्कूल और अपने सहपाठियों के बारे में सोचा। काजल ने कलेक्टर से अपनी बात कही जिसने उसकी हिम्मत के लिए उसे शाबाशी दी और फौरन कंप्यूटर टीचर की नियुक्ति का आदेश निकाल दिया।

12वीं अव्वल दर्जे में पास होने के बावजूद घर की परिस्थिति की वजह से कॉलेज में वह दाखिला नहीं ले पायी। पर सीखने सीखाने का सिलसिला चलता रहा। आय के लिए काजल ने बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया। कंप्यूटर स्कूल में सीख पायी थी इसलिए आर्सेटी सेंटर में प्रवेश ले लिया। इससे काजल को बेसिक जानकारी मिल गयी।

इस बीच डूंगरपुर में आजीविका ब्यूरो ने टेली अकाउंटिंग का प्रशिक्षण शुरू किया। काजल को लगा कि इससे अच्छा मौका नहीं मिलेगा। पर इसमें एक अड़चन थी। इस बैच में सिर्फ पुरुष थे। काजल जब दाखिला लेने पहुंची तो आजीविका के कार्यकर्ता ने कहा कि वे लोग इस बैच के पूरा होने के बाद लड़कियों का बैच शुरू करेंगे। पर काजल ने ज़ोर दिया कि उसे लड़कों के साथ सीखने में कोई परेशानी नहीं है। काजल की सीखने की इच्छा के सामने सिखाने वाले को झुकना पड़ा। इस तरह 20 पुरुषों के बीच में एक अकेली काजल ने टेली अकाउंटिंग सीखी।

काजल अभी एक इंस्टीट्यूट में टेली की प्रशिक्षक है।स्नातक होनेवाली है। भविष्य में अपनी माँ की इच्छा पूरी करने के लिए सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए भी प्रयास करेगी।

टेली अकाउंटिंग के दौरान उसे जो जीवन कौशल प्रशिक्षण मिला काजल उसकी बहुत सराहना करती है।

नजर में हैं।
Join the best Animation Institute in Dungarpur
Wel-Come to
Our Courses
Graphic Design & Suite
Web Design & Suite
2D Animation & Design Suite
3D Animation & Design Suite
3D Architectural CAD
Visual Effect (VFX)
Institute of Animation & VFX
JOIN NOW
राजस्थान सरकार
द्वारा अधिकृत
ई-मित्र
Emitra Name : एप्पल एनिमेशन ई-मित्र
Mobile No. : 9314263121
Kiosk Address : गांधी आश्रम, डूंगरपुर
Kiosk Code : K124234779
FRIENDS FOREVER

काजल

शांत स्वभाव की केसु से एकबार मिलकर आप को महसूस हो जाएगा की वह कितना गहरा सोचती है। 40 वर्षीया केसु के लिए आगे बढ़ना एक स्वाभाविक-सी प्रक्रिया है।

राजस्थान के डुंगरपुर जिले के साबला ब्लॉक में केसु का जन्म एक आदिवासी परिवार में हुआ। पाँच भाई बहनों में केसु दूसरे नंबर की थी। घर में दोनों भाई और छोटी बहनों ने स्कूल में पढ़ाई की पर केसु और उसकी बड़ी बहन बिल्कुल अनपढ़ रह गए। अब केसु को यह ध्यान नहीं आता की क्या वजह रही की वह स्कूल नहीं गयी। हालांकि उसे नई नई चीज़ें सीखने का शौक तो हमेशा से रहा है।

केसु 15 साल की थी जब उसकी शादी कर दी गयी। ससुराल भरा पूरा था। सब एक साथ मिलजुल कर रहनेवाले थे। पति मज़दूरी करते थे। केसु भी अपने घर के आसपास कुछ काम करती रही। परिवार बड़ा होने के साथ साथ केसु और उसके पति को यह समझ आने लगा था कि हेल्पर की कमाई से घर का खर्चा नहीं चल सकता। हेल्पर के काम में मेहनत ज़्यादा है और पैसे कम मिलते हैं। केसु ने बीच में मनरेगा में काम शुरू किया था। पर मनरेगा में उसे कभी भी पूरा पैसा नहीं मिला और न ही पूरा काम। इसी बीच, उसे आजीविका ब्यूरो की प्रशिक्षण इकाई स्टेप से कारीगर की ट्रेनिंग लेने का प्रस्ताव मिला। मेहनती और कुछ सीखने की इच्छुक केसु ने तुरंत हाँ कर दी। पर बाद में उसे लगा कि अब कुछ नया सीखने की उसकी उम्र नहीं रही। पर उसके पति और बच्चों ने सीखने के लिए बहुत प्रोत्साहित किया।

केसु की चार बेटियाँ और तीन बेटे हैं। बड़े बेटे की शादी हो गयी है और वह काम करता है। वह घर में अकेला है जिसने सिर्फ छठी कक्षा तक पढ़ाई की है। अन्यथा सभी बेटियाँ और दोनों बेटे भी नियमित रूप से स्कूल जाते हैं। केसु की हमेशा से अपने बच्चों को पढ़ाने की इच्छा थी।

ऑन द जॉब ट्रेनिंग, जिसमें आप काम करते हुए सीखते हैं, की वजह से केसु को कोई मुश्किल नहीं पेश आयी। केसु काम करते हुए सीख कर रही थी और उसे मज़दूरी भी मिल रही थी। केसु इस बात से खुश भी थी कि अब वह हेल्पर से कारीगर बनने जा रही थी। बच्चे भी इस वजह से काफी उत्साहित थे। उधर संस्था ने सिखाने वाले ठेकेदार से यह वादा भी लिया था कि जब वह काम सीख जाएगी तो वह उसकी मज़दूरी भी बढ़ाएगा। कंस्ट्रक्शन के काम में अभी भी ज़्यादा पुरुष ही कारीगर होते हैं और महिलाएं हेल्पर। दोनों को मिलनेवाली मज़दूरी में बहुत अंतर होता है। बहुत मुमकिन है कि पुरुष प्रधान समाज में धीरे-धीरे इस व्यवस्था ने बाद में परंपरा का रूप ले लिया होगा। जबकि देखा जाए तो महिलाएं किसी भी तरह पुरुष से कम नहीं होतीं। केसु जैसी महिलाओं के आगे आने से इस तरह का भेदभाव भी कम होगा, ऐसी उम्मीद की जा सकती है।

हेल्पर से कारीगर बनने के बाद केसु की दिहाड़ी 300 रुपये प्रति दिन से 600 रुपये हो गयी जो कि दोगुनी है।

केसु के लिए यह तो पहली सीढ़ी थी। इसके बाद किसी ठेकेदार के नीचे काम करने के बजाए उसने खुद ठेके लेने शुरू कर दिए।

गहरी सोच रखने वाली केसु ने सोचा कि क्यूँ न महिलाओं को ही कारीगर की ट्रेनिंग दी जाए। आज केसु की देखरेख में कई औरतें कारीगर की ट्रेनिंग ले रही हैं।

केसु मानती है कि ऐसा कोई भी काम नहीं है जो महिलाएं नहीं कर सकतीं।

केसु मीणा

उदयपुर के सायरा ब्लॉक के एक सुदूर गाँव की रहने वाली दो सहेलियों मंजु एवं संगीता की उम्र अलग थी पर सपने काफी एक से। दोनों को पढ़ने का शौक। दोनों गाँव से निकल कर शहर में रहने और पुलिस फोर्स में जाने के सपने देखती थीं। पर यह होगा कैसे पता नहीं था।

सौभाग्य से पढ़ने की शौकीन मंजु को घर वालों का हमेशा साथ मिला। मंजु कुमारी मेघवाल अभी 24 वर्ष की है और पॉलिटिकल साइन्स में मास्टर्स किया है। मंजु कहती है कि बचपन में घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने और पोषण संबंधित जानकारी कुछ कम होने की वजह से वह कमजोर रही । इसका परिणाम उसे अब भुगतना पड़ा। पुलिस की नौकरी के लिए न्यूनतम वजन जितना होना चाहिए, मंजु का उतना नहीं था। सो वजन कम होने की वजह से मंजु की पुलिस में नौकरी नहीं लग पायी।

उधर उसकी सहेली संगीता कुमारी मेघवाल जो अभी सिर्फ 19 वर्ष की थी और 12वीं की कक्षा अभी पास की थी। वह भी पुलिस की नौकरी करना और गाँव से बाहर जाना चाहती थी। पर घर वाले तो इस बात के सख्त खिलाफ थे।

दोनों जब एक दूसरे से मिलतीं तो सोचती कि क्या करें। कैसे गाँव से घर से बाहर निकलें।

एक दिन उनके गाँव में आजीविका ब्यूरो के एक कार्यकर्ता से उनकी मुलाक़ात हुई। कार्यकर्ता ने बताया की उनकी संस्था युवा लड़कियों के लिए कंप्यूटर के साथ ई-मित्र ऑपरेटर की ट्रेनिंग शुरू करनेवाली है। यह आवासीय ट्रेनिंग उदयपुर में उपलब्ध थी। एक बार तो दोनों के घरवालों ने साफ मना कर दिया। पर दोनों अपने ज़िद पर अड़ी रहीं। फिर अभिभावक मान गए। दोनों ने एक साथ ट्रेनिंग ली और फिर ट्रेनिंग पूरी होने के बाद दोनों बोलीं कि उन्हें फौरन नौकरी करनी है। अगर वे गाँव गईं तो वापिस नहीं आ पाएँगी।

आजीविका ब्यूरो ने उन्हें नौकरी मिलने तक ट्रेनिंग सेंटर के हॉस्टल में रखा।

आज दोनों उदयपुर के सेलिब्रेशन मॉल के फूड ज्वाइंट्स में काम कर रही हैं। दोनों एक घर में रहती हैं और अभी भी उनका भविष्य में पुलिस फोर्स में जाने का मन है। दोनों का मानना है कि अगर संस्था ट्रेनिंग नहीं देती और ट्रेनिंग के बाद सपोर्ट नहीं करती तो बड़े शहर में रहने का उनका ख्वाब अधूरा ही रह जाता।

मंजु एवं संगीता

मीरा मीणा को पढ़ने का बहुत शौक था। पढ़ने को लेकर उसके घर में भी ऐसी कोई समस्या नहीं थी। पर समस्या गाँव में थी। मीरा 8वीं कक्षा तक तो हर कक्षा में अव्वल रही, पर इससे आगे पढ़ नहीं सकी क्योंकि गाँव में माध्यमिक स्कूल नहीं था। माँ-बाप पढ़ने से रोक नहीं रहे थे पर वे इतने सक्षम भी नहीं थे कि उसे रोज़ छः किलोमीटर छोड़ने जाएँ। या उसे स्कूल छोड़ने के लिए ऑटो या बस का इंतज़ाम करते। छः किलोमीटर एक छोटी बच्ची के लिए अकेले जाना सुरक्षित भी नहीं था। सबकी इच्छा के बावजूद प्रशासन की लापरवाही या कहें गाँव के बच्चों के प्रति सरकार की उदासीनता ने मीरा को आगे पढ़ने नहीं दिया।

कुछ समय के बाद माँ–बाप को लगा कि मीरा कुछ नहीं कर रही है तो क्यूं न उसकी शादी कर दें। राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में जन्मी मीरा की शादी उदयपुर के सलूम्बर ब्लॉक के रामू से हो गयी। रामू भी देश के विकास के उस मॉडल का पीड़ित था। उसकी पढ़ाई भी गाँव में उच्च माध्यमिक विद्यालय न होने की वजह से छूट गयी थी। रामू भी उच्च शिक्षा के अभाव में रोज़ी रोटी कमाने के लिए अहमदाबाद एवं उदयपुर जैसे शहरों में मज़दूरी करता है। मीरा अपने परिवार की दो बीघा ज़मीन पर खेती में सास ससुर का हाथ बंटाती थी।

मीरा लगातार अपने पति से कमाने की इच्छा ज़ाहिर करती थी। एक दिन रामू ने उसे एक सिलाई मशीन लाकर दे दी। मीरा अपने आप सिलने का प्रयास करने लगी। पर बिना किसी प्रशिक्षण के यह बहुत मुश्किल था। उसे फिर अपना बचपन याद आया कि कैसे स्कूल न होने की वजह से वह पढ़ नहीं पाई थी। वैसे ही उसे लगा की किसी प्रशिक्षण के अभाव में वह सिलाई भी नहीं कर पाएगी। पर एक दिन रामू का संपर्क आजीविका ब्यूरो की एक कार्यकर्ता से हुआ। उन्होंने बताया कि उनकी संस्था सलूम्बर में ही महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण शुरू करने वाली है। यह प्रशिक्षण एक महीने का होगा। मीरा की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने यह प्रशिक्षण लिया।

अब मीरा एक सफल कमर्शियल टेलर है।

बांसवाड़ा

SEWING MACHINE
SARK'S SKIN
MADE FROM NEW GENERATION
White Rose Collection

मीरा

चार बहन और एक भाई में सबसे बड़ी होने की वजह से गोटी पर सबसे ज़्यादा जिम्मेदारियाँ रहीं। पिता टाइल फिटिंग का काम करते हैं और माँ घर का काम करती हैं। घर में सदस्य ज़्यादा होने की वजह से पिता के लिए घर में सबको भर पेट खाना खिलाना भी मुश्किल था। कोविड के बाद घर में हालात और खराब हो गए थे। मार्केट में काम एकदम बंद हो गया था। स्कूल कॉलेज भी बंद थे। इसलिए 12वीं कक्षा पास करने के बाद गोटी ने पढ़ाई छोड़ने का निश्चय कर लिया और घर से ही कुछ काम करके अपने माँ-पिता की मदद करने लगी।

कुछ समय के बाद गोटी को अपने चाचा से आजीविका ब्यूरो द्वारा संचालित होटल एवं हॉस्पिटैलिटी कोर्स का पता चला। एक महीने के आवासीय कोर्स के बाद संस्था ने उसके सामने दो विकल्प रखे – या तो किसी स्थानीय होटल में प्लेसमेंट या फिर बेंगलुरु में साथिया नामक संस्था के सहयोग से चलने वाली हुनर की ट्रेनिंग। गोटी, जिसने पीछे मुड़कर देखना नहीं सीखा था, ने हिम्मत की और अपने घर में इस मुद्दे पर सबसे मश्विरा की। आजीविका पर सबको विश्वास था सो सबने हाँ कर दी। इंग्लिश न आने के कारण बेंगलुरु में ट्रेनिंग के दौरान थोड़ी मुश्किल हुई पर वह उसका रास्ता नहीं रोक पायी। दक्षिण का खाना खाना उसके लिए काफी कठिन था। गोटी कहती है कि ज़्यादातर समय उसने दही चावल पर गुज़ारा कर ट्रेनिंग पूरी कर ली।

अब गोटी स्वयं को एक सफल ट्रेनी मानती है और जयपुर के पाँच सितारा होटल में काम करती है।

पिक्चर: गोटी (दाएं)

गोटी सुथार

जयपुर के पाँच सितारा होटल के हाउस कीपिंग डिपार्टमेंट में काम कर रही शीतल काबरा को देखने से लगता है कि उसने इतनी छोटी उम्र में कितने रिवाज़ों को तोड़ा होगा इसका अंदाज़ा शायद उसे भी नहीं है।

राजसमंद में जन्मी शीतल एक किसान परिवार से है। उसके पिता खेती करते हैं और माँ घर चलाती हैं। दोनों माँ बाप पढ़े लिखे नहीं हैं इसके बावजूद उन्होंने अपने सभी बच्चों को पढ़ाया। शीतल 12वीं कक्षा पास करने के बाद सोच रही थी कि वह क्या करे। अपने स्कूल के अन्य साथियों की तरह उसके लिए सरकारी नौकरी करना ख्वाब था, इस बीच एक मित्र के सोशल स्टेटस से आजीविका ब्यूरो द्वारा चलाये जा रहे होटल एवं हॉस्पिटैलिटी कोर्स के बारे में पता चला। साथ में संस्था का यह वादा भी था कि नौकरी दिलवाने में भी वे मदद करेंगे। शीतल ने अपने माँ बाप से बात की। वे उसे शहर भेजने से घबराए तो पर उसकी इच्छा देखकर मान गए। शीतल ने मावली से होटल एवं हॉस्पिटैलिटी का कोर्स खत्म किया ही था कि संस्था ने बताया कि बेंगलुरु में साथिया नामक एक साथी संस्थान हाउस कीपिंग का कोर्स करा रही है जिसके बाद किसी बड़े होटल में प्लेसमेंट हो सकता है।

शीतल पहले तो सोच में पड़ गयी क्योंकि उसने तो अपने जिले की सीमा तक नहीं देखी थी और ऐसे में वह एकदम देश के दूसरे कोने में कैसे जा सकती है। पर माँ बाप का शीतल पर विश्वास एवं शीतल का पीछे मुड़ कर नहीं देखने के संकल्प ने यह मुश्किल भी आसान कर दी। बेंगलुरु में शीतल ने हाउस कीपिंग की ट्रेनिंग ली। हिन्दी-इंग्लिश के भेद से तो पार पाया ही साथ में रोटी-चावल की लड़ाई भी समाप्त कर दी.

आज शीतल राजसमंद से निकल कर बेंगलुरु होते हुए जयपुर पहुंची गयी है और हाउस कीपिंग विभाग में काम कर रही है।

शीतल काबरा

20 वर्षीय रिया के पिता के नहीं होने से उसका जीवन काफी मुश्किलों से भरा रहा। माँ पास के रिको क्षेत्र में एक स्टोन फ़ैक्ट्री में काम करती है। इसमें दिहाड़ी के रूप में कुछ खास आमदनी नहीं होती। रिया को यह भी पता था कि स्टोन फ़ैक्टरी में काम करने वाले अक्सर बीमार रहते हैं। ज़्यादातर लोगों को सांस चढ़ने की बीमारी हो जाती है। इस वजह से रिया काफी चिंतित रहती थी। पिता थे नहीं और अब वह माँ को खोना नहीं चाहती थी। पर उस क्षेत्र में काम के कोई और खास अवसर नहीं थे। इसीलिए 12वीं पढ़ने के बाद रिया ने काम करने का इरादा किया। रिया को ब्यूटीशियन के काम का शौक था और उसे उसके गाँव के पास एक कस्बे में ब्यूटीशियन का कोर्स करने और वहीं काम करने का भी मौका मिल गया। इस काम में उसे खूब मज़ा भी आ रहा था और अच्छी आमदनी भी हो रही थी । लेकिन पार्लर में जाने का समय तो फ़िक्स्ड था पर वापस जाने का समय पार्लर की मालकिन तय करती थी। ऐसे में रात को घर पहुँचना बहुत मुश्किल था। इसलिए उसे ये काम छोड़ना पड़ा।

इस बीच उसे अपने चाचा से आजीविका ब्यूरो द्वारा चलाया जाने वाले रिटेल एवं सेल्स कोर्स के बारे में पता चला जो एक अच्छा अवसर था। उसके स्कूल की कुछ सहेलियाँ भी यह कोर्स उसके साथ करना चाह रही थीं। ब्यूटीशियन का काम छूटने के बाद यह कोर्स उसके लिए जीवन रक्षक साबित हुआ। आज रिया एवं उसकी सभी दोस्त एक महीने का कोर्स करने के बाद शहर के मॉल में काम कर रही हैं। यहाँ उसे नियुक्ति पत्र मिला है जो बहुत मायने रखता है। पीएफ एवं ईएसआई की सुविधा है। काम का औपचारिक रूप भी बहुत महत्वपूर्ण है।

शाम को काम के बाद वह इंस्टाग्राम अकाउंट देखने में अपना समय बिताती है। डांस करने की शौकीन रिया ने कभी सोचा नहीं था कि वह इतना बढ़िया काम कर सकती है।

रिया

चार बहनों में सबसे बड़ी शबनम हमेशा से डॉक्टर बनने का सपना सँजोती रही। अजमेर के एक गाँव में जन्मी शबनम खुशकिस्मत थी कि उसकी माँ भी उसे डॉक्टर बनाने के ख्वाब देखती थी। पिता तो हमेशा से प्रवासी श्रमिक रहे। तिरुपति बालाजी में काम कर रहे हैं। पिता कभी कभार ही त्योहार पर घर आ पाते और कभी कभार घर चलाने के लिए पैसा भेज देते। इस तरह चारों बेटियों को पालने की ज़िम्मेदारी माँ पर ही रही। कोविड के दौरान हालात और बिगड़े। शबनम को डॉक्टर बनने का अपना ख़्वाब छोडना पड़ा। पर समस्या यह थी कि गाँव में क्या किया जाये। खेती बाड़ी और मजदूरी के अलावा कमाई का कोई साधन नहीं था। शबनम अपनी माँ को खेती बाड़ी करते देखती थी और यह भी देखती थी कि इतनी मेहनत करने के बावजूद माँ न तो उन्हें पेट भर खाना खिला पाती है और न पढ़ा पा रही है।

ऐसे में शबनम ने 12वीं की पढ़ाई छोड़कर शहर जाकर कुछ करने का निर्णय किया। आमतौर पर उनके परिवार से लड़कियां शहर में अकेले न तो काम करती हैं और न अकेले रहती हैं। पर उसकी माँ ने उसे अनुमति दी कि वह शहर में कुछ काम ढूंढ सकती है। इस बीच उसे आजीविका ब्यूरो द्वारा रीटेल एवं सेल्स कोर्स के बारे में पता चला। यह भी पता चला कि कोर्स पूरा करने के बाद यह संस्था नौकरी दिलवाने में भी मदद करती है। यह सुनते ही शबनम कुछ समय के लिए पढ़ाई छूटने के दुख को भूल गयी और उसने रीटेल एवं सेल्स कोर्स में दाखिला लेने का मन बना लिया।

आज शबनम न सिर्फ अजमेर में डीमार्ट स्टोर में बढ़िया काम कर रही है बल्कि पैसे बचाकर दोबारा पढ़ने की सोच रही है । चाहे वह पढ़ाई मेडिकल की ही क्यों न हो!

शबनम

ADMISSION OPEN
2024-25
NURSERY TO 10
EXCEPTIONAL SCHOLARSHIPS
OFFICE
A-Block, Panchsheel Nagar

तबस्सुम

अजमेर जिले की तबस्सुम के घर की माली हालत ठीक नहीं थी इसके बावजूद बच्चों को पढ़ाने का माहौल था। तबस्सुम और उसकी जुड़वां बहन पढ़ लिखकर सरकारी नौकरी करना चाहती थी। शबनम ने पॉलीटेकनिक की पढ़ाई शुरू की ताकि किसी दफ्तर में टेक्निकल स्टाफ की नौकरी उसे मिल सके। पर दुर्भाग्य से घर में कुछ ऐसी समस्या आयी कि दोनों बहनों में से किसी एक को पढ़ाई छोड़ने की नौबत आ गयी।

तबस्सुम ने तय किया की वो अपनी बहन को आगे पढ़ाएगी और खुद कुछ काम करेगी। इसी बीच उसे उसे आजीविका ब्यूरो द्वारा चलाए जाने वाले एक महीने के रिटेल एवं सेल्स कोर्स के बारे में पता चला। उसने उसी वक़्त तय कर लिया की वह इसमें दाखिला लेगी । खुशी की बात यह थी की उसके बचपन की संगी साथी जिनकी माली हालत उसकी जैसी ही थी, उसके साथ कोर्स करने को तैयार हो गए। आज सभी एक साथ रहती हैं और सेल्स का काम करती हैं।

तबस्सुम का अभी आगे और पढ़ने का सपना है। अब वह प्राइवेट पढ़ाई करना चाहती है। इसके लिए वह रिटेल स्टोर में काम करके पैसे जमा कर रही है।

तबस्सुम का कहना है कि अगर उसे यह अवसर नहीं मिला होता तो पता नहीं आज वह क्या कर रही होती। वह आजीविका को धन्यवाद देते नहीं थकती।

आजीविका ब्यूरो – एक परिचय

आजीविका ब्यूरो दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण व आदिवासी इलाकों से रोजगार के लिए शहरों में जाने वाले अकुशल मजदूरों की आजीविका की बेहतरी के लिए कार्यरत है।

दक्षिणी राजस्थान के लाखों ग्रामीणजन रोज़गार की तलाश में गुजरात , महाराष्ट्र एवं अन्य प्रान्तों के शहरों व उद्योगों में मजदूरी हेतु पलायन करते हैं। यहाँ इन्हें निर्माण कार्य, ढाबों , कारखानों व खेतों में जो काम मिलता है वह हाड़ तोड़ मेहनत व निचले दर्जे का होता है। यह अल्पकालिक व अस्थाई तो होता ही है , साथ ही मजदूरी भी बहुत कम मिलती है।

आजीविका ब्यूरो का उद्देश्य प्रवास कर रहे मजदूरों के आर्थिक अवसरों व सामाजिक सुरक्षा को मजबूती देना है। संस्था मुख्यतौर पर श्रमिकों के पंजीयन करवाने,नई तकनीकी दक्षता व हुनर में श्रमिकों को प्रशिक्षित करने तथा रोजगार हेतु अधिक सक्षम बनाने का काम करती है। श्रमिकों को कानूनी जानकारी व परामर्श देना एवं कानूनी मदद करना भी बहुत अहम कार्य है। ग्रामीण परिवारों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देना व इन योजनाओं से जुड़ाव करना भी एक काम है।

संस्था श्रमिकों की बेहतरी के लिए सोर्स एवं डेस्टिनेशन दोनों पर कार्यरत है। आजीविका ब्यूरो सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 के तहत ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत है।

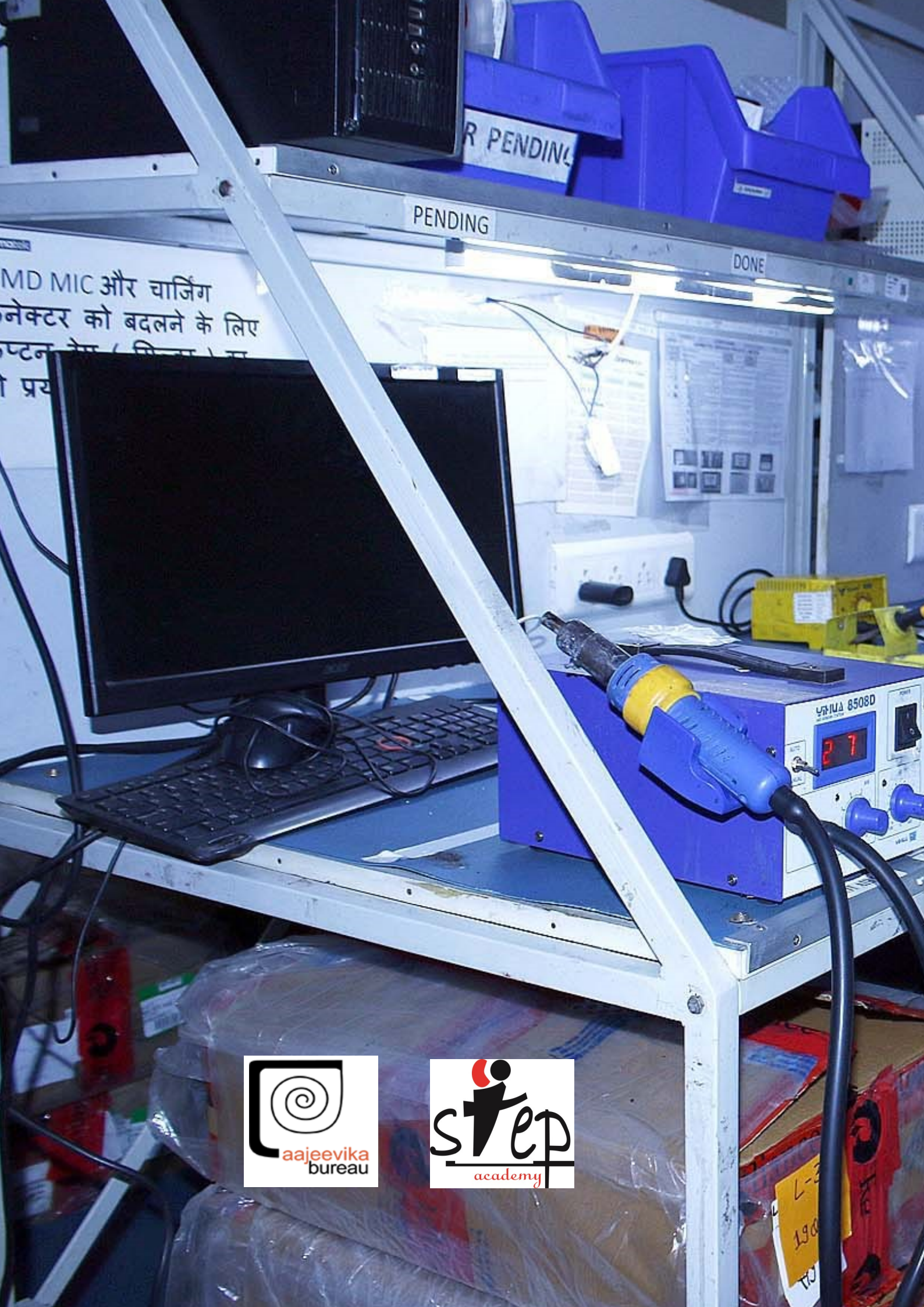

aajeevika bureau

step academy